



xFkky; dk bfrgkl % , d fl gkoyksdu

fot; fl g
i frdky; k/; {k
राजेश पायलट राजकीय स्नातकोत्तर्जे ग्रंथालय व्यक्ति के शिक्षण
यक्ष्य का अध्ययन के साथ-साथ शोध के लिए भी महत्वपूर्ण है। dkbz Hkh 0; क्ति vkthou
विद्यालय अथवा महाविद्यालय में आजीवन शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकता परन्तु वह गFkky; dk
I nL; cudj thou&lk; lJr vi uk Kku I o) u] dj I drk gA शोध पत्र ei xFkky; ds
dk; k/ ei foLrkj I ok; fuj {kj rk fuokj .k] I kekftd rFkk I kLdfrd fd; k&dyki]
प्रदर्शनियॉ, आदान&inu kku I ok; py xFkky; I ok; s vknf I fEefyr dh xbl gA vk/kfud
xFkky; k/ }kj k i nLk I okvks , o/ buds I e{k vkus वाली चुनौतियों का भी विश्लेषक fd; k
x; k gA

सारांश

i Lrpr 'शोध पत्र में 0; क्ति के सर्वोन्मुखी विकास का केन्द्र दुनिया के xFkky; ds bfrgkl dk
v | ru fl gkoyksdu fd; k x; k gA Hkkj ro"kl ds xFkky; k/ ei तक्षशिला, नालन्दा, विक्रमशिला
vkj oyHkh t/ s ifl) xFkky; k/ dk Hkh foopu fd; k x; k gA ग्रंथालय व्यक्ति के शिक्षण
और पठन के आधार के साथ-साथ शोध के लिए भी महत्वपूर्ण है। dkbz Hkh 0; क्ति vkthou
विद्यालय अथवा महाविद्यालय में आजीवन शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकता परन्तु वह गFkky; dk
I nL; cudj thou&lk; lJr vi uk Kku I o) u] dj I drk gA शोध पत्र ei xFkky; ds
dk; k/ ei foLrkj I ok; fuj {kj rk fuokj .k] I kekftd rFkk I kLdfrd fd; k&dyki]
प्रदर्शनियॉ, आदान&inu kku I ok; py xFkky; I ok; s vknf I fEefyr dh xbl gA vk/kfud
xFkky; k/ }kj k i nLk I okvks , o/ buds I e{k vkus वाली चुनौतियों का भी विश्लेषक fd; k
x; k gA

मुख्य शब्द : ग्रंथालय, शिक्षण, I o) u] i kB; I kekftd vknfA

i Lrkouk %

ग्रंथालय को स्वर्गतुल्य स्थान, ज्ञान का मंदिर, शिक्षण संस्था का हृष्ट : i h vkbh ei tMk uxhuk
आदि कई विषेषणों से विभूषित किया जाता रहा है। व्यक्ति के सर्वोन्मुखी विकास में ग्रंथालयों का
महत्वपूर्ण योगदान है। ग्रंथालय एक जन उपयोगी संस्था है जो ज्ञानी तथा अज्ञानी को समान रूप से
ज्ञान वितरित करती है। किसी शिक्षण संस्था की प्रकृति इस बात से मापी जा सकती है कि उसके
ग्रंथालय का रख-रखाव कैसा है...एक समृद्ध ग्रंथालय न केवल शिक्षण और पठन का ही आधार है,
बल्कि शोध के लिए भी आवश्यक है, जिसके बिना मनुष्य के ज्ञान-भण्डार में वृद्धि नहीं की जा
सकती।"

xFkky; dk egRo , o mi ; kfxrk

xFkky; , d I kekftd I Fkk gS tks fujlJrj I ekt dY; k. k ei jr jgrs gq I eku : lk I s Kku
forfjr djrs gA Hkkj ro"kl ei fo | knku dh cMh egek gA gekjs i oZtks us fo | knku dks I c nkuk I s
JkB ekuk gA xFkky; okLro ei fo | k ds Hk. Mkj gA xFkky; ds }kj i R; d 0; क्ति ds fy, I nL
खुले रहते हैं और जिज्ञासु की ज्ञान पिपासा छांत करते हैं। यह जन साधारण को आजीवन स्विक्षण
i klr djus ei I gk; d fl) gkrs gA dkbz Hkh 0; क्ति vkthou fo | ky; vFkok egkfo | ky; ei



आजीवन शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकता परन्तु वह ग्रंथालय का सदस्य बनकर जीवन—॥१॥ वि उक्कु
।॥०॥ दृ इ ड्रक् ग़ा किसी भी शिक्षण संस्था में एक सीमित संख्या में विद्यार्थी होते हैं जो कुछ
सीमित वर्षों तक शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं किन्तु एक ख़्रक्क्य; ए॥उ रक्स इ ट्फेर मि ; क्स ड्रक् ग़र्स ग़ व्हज्ज्
उ व्हज्ज् ; उ अली डक्क्स इ ट्फेर वोफ्क् ग़र्स ग़ा , द इ कॉट्फुद ख़्रक्क्य; ए॥स्प्रेस फ्लै ; क्व्ह व्हज्ज् ; ग्वर्ड
कि वृद्ध व्यक्ति भी स्वशिक्षा के लिए प्रवेष प्राप्त कर सकते हैं ग्रंथालय के संचालन हेतु एक ऐक्षणिक
संस्था के समान शिक्षकों की भी आवध्यकता नहीं होती है।

ग्रंथालय जन साधारण को अपने अवकाष के समय का सदुपयोग और स्वल्फ़क् एक्ज़िष्टु इ॥र ड्जुस ड्स
उत्तम साधन है जो सभी को निष्पक्ष रूप से सभी विषयों पर आधुनिकतम सूचना और पाठ्य सामग्री
इ॥र ड्जुस ड्स इ क्कु ड्स इ क्फ़क्& इ क्फ़क् तु इ क्कज्ज्.क ड्क्स ट्क्सः ड ह्ह ज [क्स ग़ा ब्ल इ डक्ज् टुर्क वि उस
ड्र०; क्स ड्क्स इ ज्ज् ड्जुस ड्स इ क्फ़क्& इ क्फ़क् वि उस व्फ़/क्डक्ज् क्स ड्स इ फ्र इ प्र ज्ग इ ड्रह ग़ा ख़्रक्क्य; ए॥ इ फ्प्र
इ क्ब़; इ केख्ह डक्ज् वि ; क्स ड्जुस ड्क्क्स ह्ह ०; फ्क्त वि उस ड्क्स; लै एन्क्रक्त इ॥र ड्जुस ०; फ्ड्रक्सर म्लुफ्र ड्स
इ क्फ़क्& इ क्फ़क् ज्क् ख्ह ०; इ ख्ह ए॥ ह्ह इ ग्क; ड फ्ल) ग्क्स इ ड्रक् ग़ा ख़्रक्क्य; क्स ड्स }ज्ज् ग्ह ज्क् ख्ह ०; ड्रक्
व्हर्ज्ज् ख्ह य बान्ति, सहयोग रक्क्स इ न्हक्कुक्कु ए॥ ओ) ड्जु इ ड्रक् ग़ा ख़्रक्क्य; एक्वर्क ड्स इ क्लॉफ्र्ड
तथा साहित्यिक अवधेष्यों की आगामी पीढ़ी के उपयोग हेतु ज्ञान को संग्रहित कर रखने के अच्छे ओर
इ ज्ज् क्र लक्कु ग़ा ख़्रक्क्य; 'अज्ञानियों के द्वार तक निःशुल्क ज्ञान को ले जाना' मुद्क्स इ र; एक्स्ल
इ ज्ज् व्हसित करना— इस प्रकार के दान के समान कुछ नहीं है। ग्रंथालय एक पवित्र एंव कार्यषील
इ लक्क्स ग़०; ग्वर्ड फ्ड सम्पूर्ण विष्य भी दे देने पर भी इसकी समानता नहीं कर सकता। समाज के
फोहक्कु ओक्स ड्स ०; फ्ड्र; क्स की ऐक्षणिक आवध्यकताओं की पूर्ति के लिए ग्रंथक्य; क्स अह इक्सेडक् व्हर; उर
एग्रोइ व्ह क्स

ग्रंथालय जन साधारण को उनकी रूचि तथा आवध्यकता के अनुकूल पाठ्य—। केख्ह इ न्कु ड्जुस ग़ा ट्क्स
फ्ड मुद्क्स इ क्कज्ज्.क क्कु ड्क्स फोड्फ्ल र ड्जु एक्ज़िष्टु ड्जु इ केह्ह; ट्कुदक्ज्ह ए॥ ओ) ड्जुस इ स
इ एफ्ल/क्र ग्क्स इ ड्रह ग़ा तु ख़्रक्क्य; ड्स ड्क्स; क्स एफ्लरक्ज् इ ओ; } ५ extension services ५ फुज्क्रक्ज् फुक्ज्.क्रक्ज्
फुक्ज्.क्रक्ज् इ केक्फ्ट्ड रक्क्स इ क्लॉफ्र्ड फ्ड; क्स ड्यक्क्यि] इ न्हनियों, आदान&इ न्कु इ ओ; } प्य ख़्रक्क्य;
सेवाये आदि सम्मिलित है। ऐक्षणिक ग्रंथालय मूलतः अपने शिक्षार्थियों तथा शिक्षकों के अध्ययन तथा
वुद्ग्क्कु इ स इ एफ्ल/क्र इ क्ब़; इ केख्ह अह ०; ओलक्क्स रक्क्स इ ज्ज्.क ड्जुस ग़ा

ब्ल ह इ डक्ज् र्डुह्फ्ड ५ लक्कुक्कु १ स इ एफ्ल/क्र ख़्रक्क्य; क्स ड्स ड्क्स; लै एवि उस फ्ड; क्स ड्यक्क्यि क्स १ स इ एफ्ल/क्र
व्ह.क्स एक्स्ल ५ micro-document ५ इ ओ] इ यस्कु ५ documentation ५ इ ओ र्डुह्फ्ड ५ पुक्कु ५ ओ
आदि कार्य सम्मिलित है। तथा बासकीय विभागीय ग्रंथालय प्रषासन कार्य में सहायक सिद्ध होते हैं।
ज्क् ख्ह य ग्रंथालय किसी देष के ग्रन्थक्य; र्ड्ड ५ library system ५ ए॥ इ ओप्प ख़्रक्क्य; ड्स : ल्क ए॥
कार्य करते हैं। अतः ग्रंथालय के महत्व को न्यून नहीं किया जा सकता। ग्रंथालयों को देष की आर्थिक,
औद्योगिक, वैज्ञानिक और ऐक्षणिक संरचना में अपना महत्वपूर्ण योगदान के साथ ही ग्रंथालयों का महत्व
०; क्स ड्यक्क्यि

ह्हक्ज् र ए॥ ख़्रक्क्य; क्स ड्क्स इ एक्स्ल ब्फ्रग्क्स

ि लर्डक्स रक्क्स व्ह; व्ह; उ& इ केख्ह ड्स इ एग व्हज्ज् मुद्क्स । ज्ज् क्क डक्ज् डक्ज्; लै एक्वो ट्क्फ्र ड्स ब्फ्रग्क्स ए॥
। ह्ह रक्ज् डक्ज् इ क्कु ड्क्स ट्क्स इ ड्रक् ग़ा इ लर्डक्स ड्स इ एग ड्स }ज्ज् ग्क्स एक्वो उस वि उस }ज्ज् ग्क्स व्हज्ज्
व्हज्ज् इ फ्प्र फोक्ज् क्स अह इ ज्ज् एक्ज् ड्क्स ह्हक्क्स इ ह्हक्क्स ड्स एह ज्ज् एक्वो वि उक्क्स इ ज्ज् एक्ज् ख़्रक्क्य; क्स
ड्क्स फोज्ज्.क एफ्नज्ज् क्स व्हज्ज् ज्क्त ह्हक्कुक्कु ए॥ व्हफ्क्स्क्स ड्स इ एग ए॥ फेर्क्स ग़ा इ व्हक्ल्व्ह य्स क्म्ज्स उस 1850



bD es fuuok **Ninevah** % dh [kpkbl es fevhi dh fvfd; k dk , d vPNk l xg feyk FkkA , s k vuoku g\$ fd og , d xFkky; FkkA ftI es 10000 fofhkuu dfr; kWvkj i ysk FkkA

vyDtM; k dk xJFkky;

bfrgkl ifl) fl dlunj dk uke vyDtMj FkkA ml us , d egku uxj dh LFkki uk dh FkhA ml s vyDtMya (सिकन्दरिया) कहते हैं। इनका ग्रन्थालय बृष्णम (Bruchem % ds efnj ds l kfk l yxu FkkA ogha l jkfQI **Seraphis** % efnj ds l yxu , d nijk xJFkky; FkkA jke es ijL; e ds iJrdky; dh LFkki uk 167 bD iD vkj , ifydu ds iJrdky; dh LFkki uk 86 bD iD gpo FkhA इनका अनुसरण अन्य सम्राटों ने किया। मिश्र देष में ईसो iD es dbz iJrdky; k dk gkuk fl) gksk gA

बृटिष राष्ट्रमण्डल के देषों में ग्रेट ब्रिटेन प्रधान देष है। वहाँ पर राजकीय पुस्तकालय, विष्वविद्यालय और dkyst iJrdky;] vkj k/kuk&xg vkj ppz ds iJrdky;] nkr0; iJrdky;] l koltfud iJrdky; vkn lk; lFkk LFkkfir gA ; gkW ds jktdh; iJrdky; k es l oU\$B 'बृटिश म्युजियम' iJrdky; gA ; g iJrdky; ynu uxj es fLFkr gA bl dh LFkki uk ikfyk keW ds l u-1753 bD ds dkun ds vuq kj gpo FkhA l j g\$ Lyks u uked 0; fkt l s l jdkj us 20]000 iKM es ml dk l Eiwk xFk&l xg [kjhn fy; k FkkA bl l xg ds vfrfjक dkfksfu; u iJrdky;] gkjfy; u l xg vkj vkJ , MoM ds iJrdky; Hkh bl h l ph es vkr g\$ ftudk l kefgd : lk gh 'बृटिश E; ft; e* gA

Qd es iJrdky; k dh LFkki uk ikboha vkj NBh l nh l s gh ikjEHk gpo FkhA l u-1857 bD es Qd es 340 foHkkxh; iJrdky; gks x; A mues yxHkx l k< l \$hl yk[k Nih iJrdy vkj 44]436 gLrfyf[kr xFk Fkk Qd dk l cl s ifl) iJrdky; *fcfcy; kfkd uशनल' है। यह षायद संसार dk l cl s ikphu jk"Xय पुस्तकालय है। इसकी स्थापना 14 वीं षती में हुई। यहाँ के षासक जिन देषों dks thrrs Fks ogkW ds iJrdky; k dks Hkh l kfk yrs vkr FkkA bl iJrdky; dk l xg fnu i j fnu ccrk x; kA bl iJrdky; dh fo"k; kuq kj vupe l ph cuh gpo gA bl es 60 yk[l s vf/kd Nih gpo iJrdy yxHkx 155]000 gLrfyf[kr iKFk; kW 450]000 rexs vkj fl Dds 500]000 i=&f=dk, W vkj 400]000 ekufp= rFkk vU; l kexh l xfrg gA bl es l cl s ijkuh Nih iJrd 1457 bD dh gA

teuh dks rks xFk dk HMKj dgk tkrk gA ; gkW ds dN iJrdky; k es rks djkmk dh l q; k es पुस्तके हैं। प्रषियन राजकीय पुस्तकालय की स्थापना 1661 ई0 में हुई थी। जो कि बर्लिन में है और ifl) iJrdky; gA vklX; k dk l cl s cmk iJrdky; 'नेशनल बिब्लियोचेक'gA bl es l ok ckj g yk[k Nih iJrdy rFkk l kphu gtkj gLrfyf[kr iKFk; kW l xgkhr gA ; gkW dk l cl s ikphu iJrdky; l kYtcxZ dk l \$Vi hVj पुस्तकालय है जिसकी स्थापना 11 वीं षती में हुई। हंगरी और pdkLykofd; k es Hkh ikphu l e; ds iJrdky; gA bVyh dh jkt/kkuh jke ikphu l H; rk dk x< FkkA ogkW iks ds oVhde vkj pykj uxj es egRoiwZ iJrdky; gA oVhde iJrdky; dks iks dk iJrdky; Hkh dgrs gA bl es cgr g h egRoiwZ nVh vfr ikphu xFk dk l xg gA bl es 4 yk[k 80 gtkj Nih gpo iJrdy 53]500 gLrfyf[kr xFk rFkk yxHkx 5000 ikphu Nis xFk gA



Liu vñj iñkky eñ Hkk jk"Vh; iñrdky; gñ Liu ds jk"Vh; iñrdky; dh LFkki uk 1713 bD eñ हुई इसमें बारह लाख पुस्तकें हैं। वार्सिलोना विष्वविद्यालय और सालमों के पुस्तकालय भी प्रसिद्ध हैं। bl h iñdkj Muetark, हालैड, नार्वे और स्वीडन आदि देशों में भी पुस्तकालय स्थापित हैं। राष्ट्री; iñrdky; osyft; e dh LFkki uk 1837 bD ej jkt dh; iñrdky; Muekdz dh LFkki uk] jk"Vh; iñrdky; gkyñM dh LFkki uk 1798] jk"Vh; iñrdky; Muekdz dh LFkki uk 1661 bD ej jk"Vh; iñrdky; fLol dh LFkki uk 1895 bD ej gþA

: | eñ 1917 bD dh क्राफ्टर ds ckn iñrdky; kñ dk rsth l s fodkl gñvñA f) rh; ;) ds iñkjEHk gñus l s iñvñZ; gññ 2 ykj [k i pkl gñtkj iñrdky; gñs x; s ftueñ iñrdkñ dh l a; k 50 djñM l s Hkk अधिक थी यहाँ विज्ञान विद्या संLFkk iñrdky; 114 gñ ftueñ 1 djñM 30 ykj[k iñrdkñ gñ ekLdkñ eñ विदेशी साहित्य पुस्तकालय है जिसमें विदेशी भाषाओं की 13 लाख पुस्तकें और पत्रिकाएँ हैं। इस पुस्तकालय में 7000 पुस्तकें और 2000 विदेशी भाषाओं की पत्रिकाएँ प्रतिवर्ष आती हैं। रूस का सबसे cñMk iñrdky; *yfuu iñrdky; * gñ ; g iñrdky; ekLdkñ eñ gñ ; g l fo; r l dk l cl s egRoiñk iñrdky; gñ ; gññ iñfrfnu yxHkx 5000 iñBd vkrs gñ bl iñrdky; eñ , d djñM l cñj ykj[k iñrdkñ vñj if=dk, Vgñ bl dh vyekfj; kñ 206 fdykeHvJ LFkku ñjñs gñ gñ l kfo; r l में प्रकाषित प्रत्येक पुस्तक की तीन प्रतियाँ इस पुस्तकालय को मुफ़ा iñkr gñrñ gñ foKku ds vñpk;] iñQñ j] yñkd rFkk l jdkj ds l nL; iñrdkñ ñjñ ys tkdj i< l drs gñ vñl; fdI h dks ñjñ ys tkus ds fy, iñrdkñ ugha nh tkrh gñ bl iñrdky; eñ 160 Hkk"kkvñk dh iñrdkñ l ñgñr gñ ftI eñks djñM iñkñ ykj[k i" B l a; k dh i k. Mfyfi; kñ gñ nyñHk vñj cgnñ; xFkkñ dks HkkñHkñ HñMñkj eñ j [k x; k gñ VkyLVñk;] ps[ko] cñukñ ckYtkd] xñs vñfn iñf]) yñkdñ ds xFkkñ eñ nyñHk l ñdñj.k ; gññ l ñgñr gñ iñrdkñ ds LVñj 18 eftvñkñ eñ Qñys gñ ; gññ ds Hkkj rh; foHkkx eñ egkñkkj r] xñrk] रामायण आदि के रूपी अनुवाद हैं। यहाँ बहुधा विदेशी पाठक पर्यटक, विदेशी पत्रकार, लेखक एंव oñkfud vkrs jgrs gñ

चीन और जापान के भी प्राचीनतम पुस्तकालय हैं। चीन में साहु वंश का शाही पुस्तकालय ई0 पू0 सातवीं शती में स्थापित हुआ था। यहाँ ग्रन्थों को घर में रखना शुभ समझा जाता था। अब यहाँ के विष्वविद्यालयों में विषाल पुस्तकालय स्थापित हो गये हैं। चीन के राष्ट्री; iñrdky; eñ 5 djñM phuh iñrdkñ 85 gñtkj ; jñkñ h; iñrdkñ vñj 3 ykj[k 65 gñtkj gñLrfyf[kr xñk gñ tkiku eñ 1885 bD eñ bEi hñj; yñ ds cuks ykbñj dh LFkki uk Vñsd; ks eñ gñZ FkñA bl ds vñrfjñ यहाँ ओहाषी, हीविया और नानकी के पुस्तकालय विषेष प्रसिद्ध हैं।

अमेरिका ने पुस्तकालय जगत में आष्वर्यजनक उन्नति की है। यहाँ सारे देश में पुस्तकालय का जाल सा बिछा है। यहाँ के विष्वविद्यालय पुस्तकालयों में हावर्ड विष्वविद्यालय का पुस्तकालय सबसे बड़ा iñrdky; gñ ; g eñ kpñ V jkT; fLFkr gñkñZ dkyst eñ gñ bl ds l ñg eñ ifroñk , d ykj[k l s dñ vf/kd iñrdkñ dh of) gñrñ jgrñ gñ ; g iñkñ eftvñs ds , d l ñnñ Hkou eñ fLFkr gñ bl ds अन्तर्गत 57 विषष्ट iñrdky;] 17 foHkkxh; iñrdky; vñj 07 Nk=kokl iñrdky; gñ 17 foHkkxh; iñrdky; eñ 20 ykj[k iñrdkñ gñ bues , d ykbñj gñ tks fd akwu l EcUñk iñrdkñ dh nñf; kñ dh l cl s cñh ykbñj gñ bu l Hkk iñrdky; ka dh l ipñ l nk v|ru : lk eñ dññh; iñrdky; eñ jgrñ gñ bl l ipñ eñ ; g Hkk fy[kk jgrñ gñ fd ved iñrd ved iñrdky; eñ feyxñA ; gññ i j Hkkj rh; Hkk"kkvñk ds vñd nyñHk xñk l ñgñr gñ



I a कृज़्य वेज़ अक ल c l स CMK i त्रद्य; g^ ykbcjh व्ह क्ल dkkld थे ह वांगटन नगर में फ्लक्टर g^ bl e 4 djkM l s Hkh vftkd fofo/k KkuKRed oLrpvka dk l xg g^ bl i त्रद्य; dh vi u h oxhdj.k i) fr g\$ ft l s *ykbch व्ह क्ल dkkld fl LVe* dgrs g^ oxhdj.k i) fr ds vud k j gh ; gkw i त्रद्य dks 0; ofLFkr fd; k tkrk g^

Hkj ro"kl e xFkka ds l xg dh i jEijk lkphu dky l s gh jgh g^ lkphu Hkkjr e vud cM&cMs ग्रथालय विद्यमान थे। इनमें तक्षणिला, नालन्दा, विक्रमणिला और वलभी थे। तक्षणिला का पुस्तकालय विश्वo l ky; ds l kfK FkkA ; gkw l xgthr cgeV; xFkka dh /ke cgr nj&nj rd Qsy pdh FkhA ; gkw देष विदेषों से लोग पढ़ने के लिए आया करते थे। इस पुस्तकालय में वेद, ज्योतिष, तर्क, तंत्र, व्याकरण, fp=dyl] df"kl vks 0; ki kj vkfn fo"k; ks ds xFkka dk vPNk l xg FkkA ukyunk ds i त्रद्य; dh uhd l क्रादित्य ने 425 ई० मे डाली। उसके बाद इसका बराबर विस्तार होता गया। इस पुस्तकालय का नाम 'धर्मगंज' था A

bl xFkky; ds rhu Hkkx FkkA i gys Hkkx dks *jRukf/k* n l js dks *jRul kxj * rFkk rhl js dks *jRuj itd* dgrs FkkA vi us uke ds vuj i gh mi ; lkjh FkkA **jRukf/k** नामक ग्रथालय के विषाल Hkou e uks [k.M vks 300 ds yxHkkx dejs Fks ftue, d foHkkx i frfyfi; k dk Hkh FkkA Hkkjr e phuh ; k=h dbZ o"kk rd Bgjs ftue Qkhsku o हुपुल क्स Fks tks क्रमण: 520 भारतीय ग्रंथों ds c. My o 657 xFkka dlh i frfyfi; kphu ys x; A , d vU; phuh ; k=h bfRd x yxHkkx 500 cks xU Fkka dlh i fr; kphu ys x; k og bl h mद्ध से भारत आये थे। प्राचीन काल में मन्दिरों तथा मठों में ग्रन्थों का l xg fd; k tkrk FkkA cks jktkvks ds fucly gksus ij gwkka ds l jnkj fefgj dy us bl i त्रद्य; dks {kfr i gbk; h fdUrq jktk ckykfnR; us 470 bD e ml s ijkftr djds i त्रद्य; dk m) kj fd; kA n jh ckj 1205 bD e cf[r; kj f[kydh us i cy vkre. k djds i त्रद्य; dks u"V dj MkyKA

फोक्रमणिला में 18 मठ थे। वहाँ एक cgr cMk i त्रद्य; FkkA oyHkh e jktdekh n{kk us , d i त्रद्य; dh LFkki uk dh FkhA /kkj dk jktk Hkkst i fl) fo | k&i eh rFkk l kfgR; kujhkx FkkA ml us संस्कृत ग्रन्थों का विषाल भण्डार निर्मित किया था। जैन ग्रन्थों के भण्डार गुजरात राज्य में स्थापित थे। vud e सलमान बादशाह भी ग्रन्थ—प्रेमी थे जिनमें प्रसिद्ध कवि Vehj [k] jks vykmdu f[kydh dk xFkky; FkkA bfrogkl xokg g\$ fd gpk; l dk fu/ku ml ds xFkky; dh l hf<; k l s fQI y tkus ds कारण हुआ था। अकबर, जहाँगीर और षाहजहाँ पाण्डुलिपियों के प्रेमी थे। मुरिलम काल में नगर कोट का पुस्तकालय और महमूद गर्वों का पुस्तकालय भी था। अकबर का पुस्तकालय बहुत समृद्ध था। उसमें चुने हुए 25000 ग्रंथ थे। बीजापुर का आदिलशाही पुस्तकालय और तंजौर का शरमोजी महाराज का पुस्तकालय प्रसिद्ध था। आज भी इस पुस्तकालय में 18000 से ऊपर संस्कृत के ग्रंथ हैं एवं अन्य भारतीय भाषाओं के ग्रन्थों का विषाल संग्रह है। अंग्रेजों के षासनकाल में भारत की अनेक हस्तलिखित i k.Mfifi; k l xM fcM/ u ys tk; h x; h vks ogkW bFM; k vkwQI ykbcjh के नाम से एक विषाल xFkky; LFkkfi r fd; k x; kA vHkh rd bl ve संग्रह की धरोहर को ब्रिटिश सरकार ने वापिस नहीं fd; k g\$ bl ds vfrfj क्त cfyu o i fj l ds xFkky; k e Hkh vud Hkkjr; xFk g^

Hkphu dky dh bu gLrfyf[kr xFkka dh yl ds ckotn Hkh vkt Hkkjr e gLrfyf[kr xFkka dk विषाल भण्डार विद्यमान है। सबसे विषाल संग्रहालय तमिलनाडु सरकार द्वारा मद्रास नगर में vksj; UVy ykw cjh है। इसमें लगभग 23000 हस्तलिखित ग्रंथ हैं जिनमें से अधिकांष Hkqfz i=k l fy[ks gAbi ds vfrfj क्त i luk dk **Hk.Mkj dj vksj; UVy fjl pZ bUI VHv; l ft l e yxHkk



20000 gLrfyf[kr xfk rFkk dyd^{त्रृक्} dk ** dyd^{त्रृक्} ऐशियाटिक सोसायटी ग्रन्थालय '' ft। ए लगभग 14000 हस्तालिखित ग्रंथ विषेष रूप से उल्लेखनीय है।

ब्रिटिश काल में हस्तालिखित ग्रंथों के अनेक संस्थान स्थापित हुए और उनके सूचीपत्र प्रकाशित हुए। अब आधुनिक काल में भारत में निम्नलिखित विशेष उल्लेखनीय है:

1— नेशनल लाइब्रेरी कलकत्ता।

2—दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी।

3—हिन्दी संगाहालय, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।

1— नेशनल लाइब्रेरी

यह हमारे देश का राष्ट्रीय पुस्तकालय है। यह अलीपुर (कलकत्ता) में 'वेल्वेडियर भवन' में स्थित है। सन 1948 ई० में इस पुस्तकालय को राष्ट्रीय स्तर का स्वरूप देने की घोषणा हुई। इस समय भारतीय संविधान में स्वीकृत 14 भाषाओं के साहित्य का संग्रह इस पुस्तकालय में बड़ी लगन से किया जा रहा है। मई 1954 ई० के कानून के अनुसार अब इस पुस्तकालय को भारत में प्रकाशित प्रत्येक पुस्तक की एक प्रति प्रकाशकों से मुफ्त प्राप्त होने लगी है। यह पुस्तकालय** dyd^{त्रृक्} i f^३yd ykbcjh * / khj&/khjs bl dk fodkl gyKA vr e^३bEi hfj; y ykbcjh dks dyd^{त्रृक्} i f^३yd ykbcjh ds I kfk feykdj 1902 bD e^३bEi hfj; y ykbcjh* uke j [kk x; k , ॥ Lok/khurk ds ckn i p% uke cny dj 'नेशनल लाइब्रेरी' कर दिया गया। उसके बाद भारत सरकार ने इसके विकास पर विषेष /; ku fn; kA f) rh; ipo"khz ; kstuk e^३ bl i f^३rdky; dks 10 yk[k : lk; k fn; k x; k ft। Is i f^३rdky; e^३ I kfgr I fp; k^३ dk i p^३xBu fd; k tk; , ॥ bMksykh dh fcfly; kxtQh rs kj dh tk; A futh nपतरी खाना स्थापित किया जाय और बाल पुस्तकालय व्यवस्थित किया जाय। इनके अतिरिक्त अमारे

देश में केछ ऐसे पुस्तकालय हैं, जिनमें केवल प्राच्य भाषाओं की पुस्तकों का ही संग्रह किया जाता है। जैसे सरस्वती भवन लाइब्रेरी वाराणसी, गवर्नमेंट ओरियंटल रिसर्च लाइब्रेरी—पूना, गवर्नमेंट ओरियंटल रिसर्च लाइब्रेरी—मैसूर, मुल्ला फिरोज लाइब्रेरी (अरबी भाषा), vjch vkJ Qkj l h gLrfyf[kr xfk dk विषाल संग्रहालय पटना तथा हैदराबाद में हैं, जो क्रमशः 'खुदाबख्शा ग्रन्थालय' 'rFkk * I \$ n vyh fcyxkeh xlfkky; * ds uke I s tkus tkrs gA

vkJ kfud xfkky; k^३ dk Lo: i

i kphu I e; e^३Kku i klr djus rFkk xlfkks dk v/; u djus dk vf/kdkj I hfer ykxka dks gh i klr FkkA ml I e; xlfk gkfk I s fy[ks tkrs Fks tks e^३; oku gkrs FkA xlfkks dh I j {kk dk i wklz /; ku j [kk tkrk Fkk i jUq vc i f^३fLFkfr; k^३cny x; h gA dkxt rFkk epzk ds vko"dkj us xlfk mRi knu ds {ks e^३ krkfr mRi lu dj nh gA vc xlfk ^ j {kkFk^ u gkdj ^ v/; ukFk^ gA i zkrU= ds vko"eku I s Kku i klr djuk I lk^३ dk vf/kdkj gA *xlfk I okFk^ gA* xq no joUUnukFk Vskj us dgk Fkk] ^fdI h xlfkky; dk egRo ml e^३, df=r xlfkks dh I a[; k dh vi {kk} i kB; I kexh dks mi kns cuk nsus dh {kerk I s fu. khz gA^

vkt fdI h xlfkky; dh I Qyrk dk eki n.M ml e^३ I kfgr i kB; & I kexh dk vko"eku u gkdj] xlfkky; }jk i n^३ I okFk^ gA bl dkj.k I s vkJ kfud xlfkky; k^३ e^३ i kBd dks I okFk^ ekurs gq



ml dks l Hkh i dkj dh l fo/kk; a inku dh tkrh gA rRij l kexh [kkstus ds fy, vk/kfud oxhdj.k rFkk l phdjk.i) fr; kW vi uk; h tkrh gA l puk, W i klr djus rFkk i kB; &l kexh [kkstus ds fy, 0; kxcr l ok ds : lk eI l UnHk l या प्रदान की जाती है। अध्ययन, चिंतनशील, एंव अनुषीलन करने के लिए ग्रन्थालय में उचित शांत वातावरण तथा आरामदायक साज—सज्जा प्रस्तुत की जाती है। आज का ; क l puk dkUr dk ; क gS ft l dk l h/kk i dkj.k dk i Hkko i frdky; k eI l puk ds l kg.k] vuq{.k.k] i pi klr vkJ l Ei k.k ij i Mk gA ft l ds dkj.k ij Ei jkxr i frdky; k ds LFku i j Lopkfy; fodfl r gks jgs gS ft l g byDkfud i frdky; fMthVy i frdky;] oP; my i frdky; uke fn; s gA i frdky; uVofdk ds ek/; e l s {k=; } jk"Xh; vkJ vUrjXh; Lrj ij tMs gks gA vkt deI; vkJ bVjus/ ds ek/; e l s dkBZ Hkh i kBd vYi l e; e okfNr i puk o i kB; &l kexh i klr dj vi uh Hkkoh rFkk orBku l eL; kvk dk fujkdj.k vkl kuhi l s dj l drk gA

vk/kfud xFkky; } kjk i nck l ok; ॥

1- xUFk vknku&inu l ok % k/kkj.kr; k yksxksa eI xUFkky; k ds i fr; g /kk.j.k jgrh gS fd xUFkky; k dk dk; l doy i frdk ds vknku&inu dk gh gksk gA vk/kfud xUFkky;] xUFk ds vknku&inu vkJ Hkr l ok ds : lk eI rks dj rs gh gS l kFk gh vU; l ok; a Hkh inku dj rs gA

2- l kef; d प्रकाशन सेवा (**periodical publication**)% vk/kfud i kB; l kexh dk egRoi wkl vK i=&f=dk; gksrh gS ftuds }kjk i kBdks dks vk/kfud Kku ds i kFk&i kFk muds Kku l o) u] eukjatu vkJ LFkuh;] jk"Xh;] vUrjXh एंव षोध ग्रन्थालयों की जानकारी की वृद्धि में l kef; d प्रकाशनों का अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान होता है।

3- l UnHk l ok % **Reference Service** % vk/kfud xUFkky; eI i kB; &l kexh [kkstus , o p; udjus gsrq l gkuHkfr i kl 0; kxcr l ok inku dh tkrh gA bl s l UnHk l ok dgrs gA bl eI l UnHk xUFkky; h dk i kBd के मार्गदर्शन तथा सलाहकार के रूप eI dk; Z gksk gA

4- ckydk ds fy, xUFkky; l ok % l qfl) idfr&ieh dfo oMI oFk ds vud kj *ckyd euq; dk fi rk gS cky foHkkxtu xUFkky; k dk egRoi wkl foHkkx gA ft l eI ckydk dh : fp o आवध्यकता के अनुरूप i kB; &l kexh dk p; u o l kg.k fd; k tkrk gA ftueI xUFk]i=&f=dk; व अनेक प्रकार के चित्र व अन्य सामग्री होती है। कुषल बाल ग्रन्थालयी के निर्देशन में ckydk ds i Bu&i kBu eI : चिं जागृत करने हेतु उनकों कहानियाँ तथा देष—विदेष के समाचार सुनाये जाते हैं। tks cPps fuj{kj gks gS muds fy, क्रोMk foHkkx % **activity room**% eI vud i dkj ds [ksy f[kyksus , df=r dj ds LoLFk eukjatu inku dj mues : fp tkxr dh tkrh gA i fr l lrkg cPpk ds py fp= fn[kkdj mudk eukjatu rFkk Kkuo) u fd; k tkrk gS rFkk Nkws l eI cukdj l kg"Xh; k वाद—विवाद आदि में भाग दिलाकर सार्वजनिक वक्तृता हेतु प्रषिक्षित किया जाता है।

5- xUFkky; , d l kerpf; d dUnz ds : lk eI % **Community Centre** % vkt tu xUFkky;] xUFk ds vknku&inu ds i kFk&i kFk l kerpf; d dUnz ds : lk eI Hkh dk; l dj rs gA bl eI i kBdks द्वारा अध्ययन परिमण्डलों की स्थापना कर परिसंवाद व गोष्ठियाँ आयोजित कर विद्वानों, विषेषज्ञों तथा नेताओं के भाषण आयोजित किये जाते हैं। बच्चों के मनोरंजन हेतु चलचित्र प्रदर्शित किये जाते हैं। vr% जन ग्रन्थालयों में एक दर्शन कक्ष (**auditorium**) की व्यवस्था आवश d l eI tkrh gA

6- xUFkky; dh fuj{kj k ds i fr l ok; % vkl/fud xUFkky; dby l kfjk rd gh l hfer ugh jgrs vfi rq fuj{kj k dks l k{jk cukus grq mRl kgh rFkk ykdkj dkjh l nL; k dh l ok; a i klr dh tkrh gA fuj{kj ykx pyfp= vklfn ns[kdj rFkk xk"b; k vkl i fj l oknka e mi fLFkr gkdj Kkuktlu dj l drs gA

7- xUFkky; dh foLrkj.k l ok; a % **Extension Services** ½ % vkl/fud tu xUFkky; vi us i kx.k rd gh l ok i nku djus rd gh l hfer ugh jgrs vfi rq py xUFkky; }jk k Hkh i kBdk dks xUFk& l ok i nku djrs gA njLFk {k ds i kBdk ds fy, bl i dkj dh l ok mi; kxh gkrh gA अनेक अन्य जन संस्थायें जैसे समाज शिक्षण संस्थाओं, विद्यालयों आदि को अपने ग्रन्थ जमा कर देते हैं। इस प्रकार अनेक पाठकों को सेवा प्रदान की जाती है। विदेशों में नाम मात्र के शुल्क पर वृद्ध तथा अषक्त पाठकों को छंज i j l ok i nku dh tkrh gA

8- fpfdRI ky; xUFkky; %fpfdRI ky; e vu d j kfx; k dks dkQh l e; rd jguk i Mrk gA अषक्त तथा किसी भी dk; l ds vHko ds dkj.k og utj l rk vutko djrk gA vr% xUFkky; विकित्सालय का आवधक अंग होना चाहिए। इसके द्वारा रोगियों का मनोरंजन ही नहीं होता अपितु Kku e of) gkrh gA i Bu&i kBu rFkk fpdu&euu l s uohu fopkj k dh mRi fck gkrh gS tks Kku ds fodkl e l gk; d fl) gkrh gS , o jkxh 0; fck; k ds l e; 0; rhr djus ds vPNs l k/ku Hkh gA

9- nf"Vghuk ds fy; s xUFkky; % दृष्टिहीनों के प्रति समाज का विषेष उत्क्षय; Ro gA muds fy, विषेष प्रकार के ग्रन्थों का मुद्रण किया जाता है जिनको *Cjk xFk* dgrs gA budk uke buds जन्मदाता लुई ब्रेल के नाम पर पड़ा है। हमारे देश में देहरादून में *I Jy cay i d * dh LFkki uk dh xbZ gA

10- dkj kxkj xFkky; %dkj kxkj k e xFkky; dh LFkki uk djdsu dby cfu; k dk eukj tu fd; k tkrk gS vfi rq glrdykv k e n{k djds LoLFk ukxfjd thou 0; rhr djus dh vkl i fjr fd; k tkrk gS l Fk gh muds eu e vijk/kh i pfr; k ds i fr qk. kk tkxr dh tkrh gA fu"d"kl

mi l gkj ds : lk e dgk tk l drk gS fd xUFkky; k dk gekjs thou e egRoi wkl mi ; kx gS tks हमारे ज्ञान वर्द्धन के लिए अति आवधक है। इनका इतिहास बहुत प्राचीन है। ग्रUFkky; }jk k foFkju i dkj dh l ok; a i nku dh tkrh gA xUFkky; e i kBd dks l ok i f jekurs gq ml dks l Hkh i dkj dh l fo/kk; a i nku dh tkrh gA i kB; l kexh [kstus rFkk l puk i klr djus ds fy, 0; fckxr l ok ds : lk e l Unhkz l ok i nku dh tkrh gA i kBd dk l e; rfud Hkh u"V u gks vkl falih i dkj dh vli fo/kk u gks bl ckr dk i jk /; ku j [kk tkrk gA jk"Xh; xFk्षालय किसी देश के ग्रUFkky; rU= Library system ½ e l okpp U; k; ky; ds : lk e dk; l djrk gA buds vU; dk; l jk"Xh; xUFk संदर्भ सूची का निर्माण तथा प्रकाष्ठन, तकनीकि प्रक्रिया; kvk dk dUnhdj.k l ph dk fuek k jk"Xh; Lrj i j rdulfd i fck; kvk e 'kk dk l 0; oLFkk rFkk jk"Xh; Lrj i j vUrij&xUFkky; hu vknku& i nku l ok %inter-library loan ½ vklfn dh 0; oLFkk djuk gA



| nHkZ | ph

- 1- ਬਾਸਤੀ (}kj dki] kn] ਪੁਸ਼ਟਕਾਲਿਕ ਪ੍ਰਬੰਧ, ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਕ, ਹਿੰਨਦੀ ਪ੍ਰਸਾਰਕ ਪੁਸ਼ਟਕਾਲਿਕ, ਵਾਰਾਣਸੀ—1, ਪ੃. 176
- 2- ਅਗਰਵਾਲ (ਘਾਮ ਸੁਨਦਰ) xUFky; iCU/k ds ey rRo] jkt- ifly- gkm]] t; ij] ifke] ddj.k 1999 i:307
- 3- ਕ੃਷ਣਕੁਮਾਰ : ਲਾਇਬ੍ਰੇਰੀ ਆਰਗਨਾਇਜ਼ੇਸ਼ਨ, ਨਾਊ ਦਫਲੀ, ਵਿਕਾਸ ਪਲਿਕੇਸ਼ਨ ਹਾਊਸ 1987 ਪ੃.117&339
- 4- dkSyk]i h-, u-) ਰਿਫਲੈਕਸ਼ਨ ਅੱਨ ਦ ਆਰਗਨਾਇਜ਼ੇਸ਼ਨ ਏਣਡ ਬਕਿੰਗ ਅੱਫ ਦ ਨੇ਷ਨਲ ਲਾਇਬ੍ਰੇਰੀ , M n bQkV ਏਟ ਦ ਇਸਟੇਬਲਿਸਮੇਂਟ ਅੱਫ ਨੇ਷ਨਲ ਸੈਟ੍ਰੀ ykbcjh]g§KYM vklQ ykbcjh] kbh - 41] 2002]i: 37&47 , .M 222&229
- 5- vkbv, - (ਅਲਾਨ) : ਦ ਬ੍ਰਿਟਿਸ਼ ਲਾਇਬ੍ਰੇਰੀ : ਏ ਗਾਇਡ ਟੂ ਇਟਸ ਸਟ੍ਰੋਕਚਰ, ਪਲਿਕੇਸ਼ਨ ਕਲੈਕਸ਼ਨ ਏਣਡ ਸਰਵਿਸ, ਲਾਂਦਨ , ਦ ਲਾਇਬ੍ਰੇਰੀ ਏਸੋਸਿਏਸ਼ਨ ,1988
- 6- ogn fglnh xUFk | ph, ਧਾਰਮਿਕ ਮਹਾਜਨ ਤਥਾ ਕ੃਷ਣ ਮਹਾਜਨ ਦ੍ਰਾਰਾ ਸਮਾਂ fnYy] Hkkj rh; xUFk fudru
- 7- fglnh es mPPrj | kfgR;] jkttoyh ik.Ms }kj k | Ei k-okjk.kl h] ukxjh ipkfj.kh | Hkk] 1957

IJMRA